RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12th | राजनीतिक विज्ञान

ई- पाठशाला

कांग्रेस प्रणाली : चुनौतियाँ और पुनर्स्थापना

ONE SHOT

पूरा चैप्टर एक ही क्लास में...

LIVE | 02 OCT | 6:30 PM



राजनीतिक उत्तराधिकार की चुनौती

I. पृष्ठभूमि

मुख्य चुनौती

नेहरू की मृत्यु

↓

नेतृत्व का प्रश्न

PM ?

↓

लोकतांत्रिक उत्तराधिकार की परीक्षा

↓

राजनीतिक स्थिरता बनाए रखने की आवश्यकता

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



II. नेहरू के बाद लालबहादुर शास्त्री

- प्रधानमंत्री का चयन
- नेहरू की मृत्यु के बाद कांग्रेस अध्यक्ष के. कामराज ने पार्टी नेताओं और सांसदों से सलाह की।
- अधिकांश नेताओं ने लालबहादुर शास्त्री का समर्थन किया।
- वे कांग्रेस संसदीय दल के निर्विरोध नेता चुने गए।
- शास्त्री अपनी सादगी और सिद्धांत-निष्ठा के लिए प्रसिद्ध थे।
- रेल दुर्घटना की नैतिक जिम्मेदारी स्वीकार करते हुए उन्होंने पूर्व में रेलमंत्री पद से इस्तीफा दिया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

III. शास्त्री काल : 1964–1966

A) शास्त्री के सामने दो प्रमुख चुनौतियाँ थीं–

क्षेत्र	चुनौती
आर्थिक	चीन युद्ध के बाद की आर्थिक कठिनाइयाँ
कृषि	मानसून की असफलता एवं सूखा
खाद्य सुरक्षा	गंभीर खाद्यान्न संकट
सुरक्षा	1965 में पाकिस्तान के साथ युद्ध

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN



missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

B. प्रमुख नारा

- "जय जवान — जय किसान"
- यह नारा—
- रक्षा की चुनौती → जवान
- खाद्य संकट की चुनौती → किसान

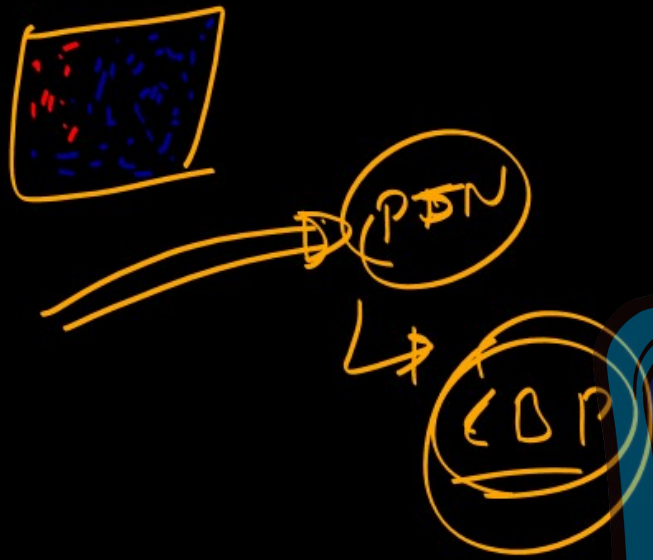
  से निपटने के दृढ़ संकल्प का प्रतीक था।

C. शास्त्री की मृत्यु

- 11 जनवरी 1966 को ताशकंद में अचानक निधन।
- वे पाकिस्तान के राष्ट्रपति मोहम्मद अयूब खान से युद्ध समाप्ति से संबंधित वार्ता और समझौते के लिए ताशकंद गए थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



IV. शास्त्री के बाद इंदिरा गाँधी

शास्त्री की मृत्यु के बाद पुनः राजनीतिक उत्तराधिकार का प्रश्न उठा।

A. प्रमुख दावेदार

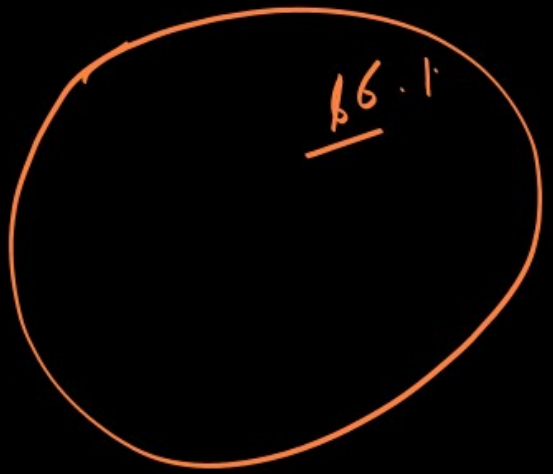
- मोरारजी देसाई
- इंदिरा गाँधी



सर्वसम्मति न बनने पर कांग्रेस सांसदों ने गुप्त मतदान किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



B. परिणाम

- इंदिरा गाँधी ने मोरारजी देसाई को पराजित किया।
- उन्हें कांग्रेस के दो-तिहाई से अधिक सांसदों का समर्थन मिला।
- तीव्र प्रतिस्पर्धा के बावजूद सत्ता का हस्तांतरण शांतिपूर्ण रहा।
- इसे भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता के रूप में देखा गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



C. इंदिरा गाँधी के सामने प्रारंभिक चुनौतियाँ

- वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं ने संभवतः यह मानकर इंदिरा गाँधी का समर्थन किया कि कम प्रशासनिक अनुभव के कारण वे उनके समर्थन और दिशा-निर्देशन पर निर्भर रहेंगी।

लेकिन इंदिरा गाँधी ने–

- पार्टी पर अपना नियंत्रण बढ़ाने,
- स्वतंत्र राजनीतिक पहचान बनाने,
- और अपना नेतृत्व कौशल सिद्ध करनेका प्रयास किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

रिक्त स्थान

जवाहरलाल नेहरू के राजनीतिक उत्तराधिकारी

[Model Paper-2024]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु के बाद प्रधानमंत्री पद के लिए किनके बीच मुकाबला हुआ?

[RBSE-2023]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

'जय जवान-जय किसान' का नारा किसने दिया?

[RBSE-2023]



लघूत्तरात्मक प्रश्न

लालबहादुर शास्त्री के सामने दो प्रमुख चुनौतियाँ बताइए।

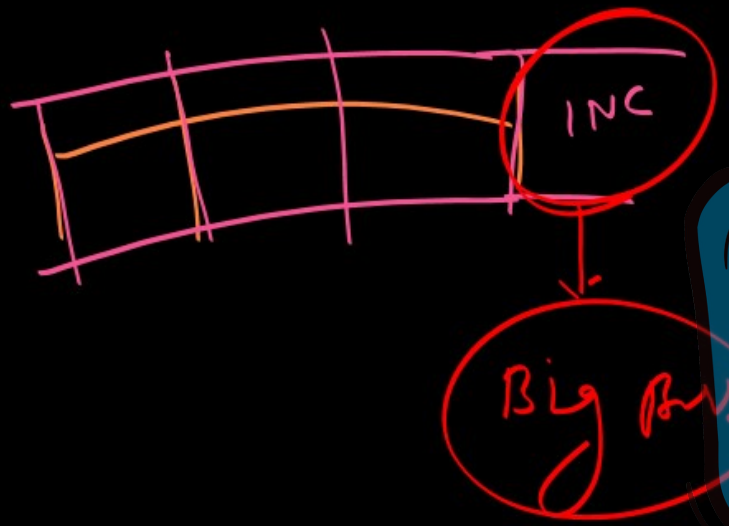
[RBSE-2023]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

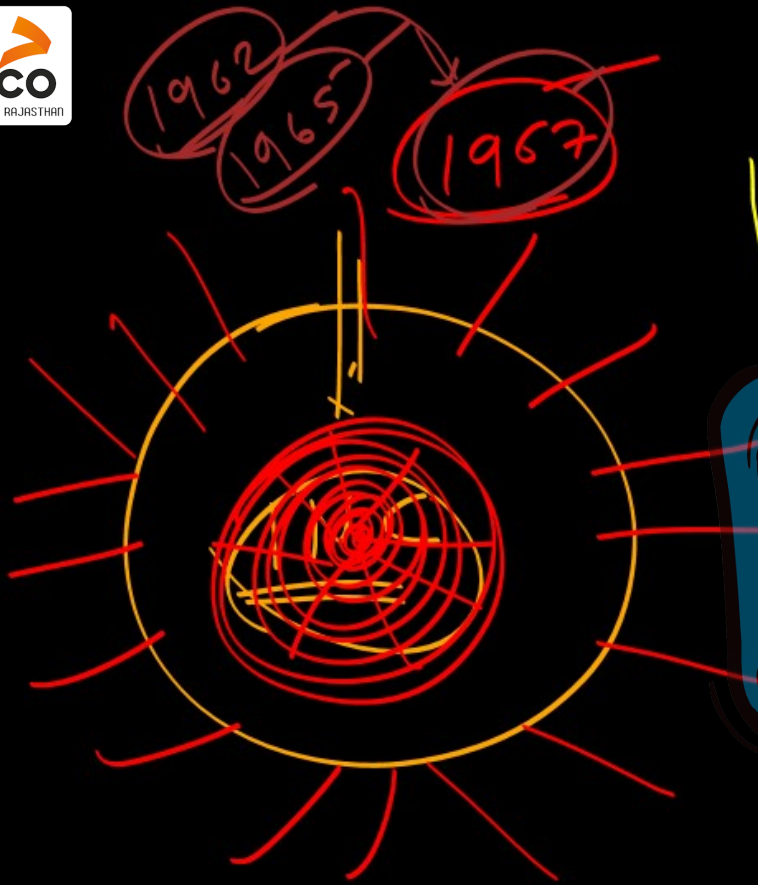
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चौथा आम चुनाव, 1967



I. महत्व

- 1967 भारतीय राजनीतिक एवं चुनावी इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण मोड़ था।
- 1952 से स्थापित कांग्रेस के राजनीतिक प्रभुत्व में पहली बार गंभीर गिरावट दिखाई दी।



II . 1967 के चुनावों की पृष्ठभूमि

A. आर्थिक संकट

देश गंभीर आर्थिक कठिनाइयों से गुजर रहा था—

- मानसून की असफलता
- व्यापक सूखा
- खेती की पैदावार में गिरावट
- गंभीर खाद्य संकट
- विदेशी मुद्रा भंडार में कमी
- औद्योगिक उत्पादन में गिरावट
- निर्यात में गिरावट
- सैन्य खर्च में भारी वृद्धि

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

B. रुपये का अवमूल्यन

पहले 1 अमेरिकी डॉलर = 5 रुपये

अवमूल्यन के बाद 1 अमेरिकी डॉलर = 7 रुपये

अवमूल्यन को अमेरिका के दबाव से जोड़कर देखा गया।

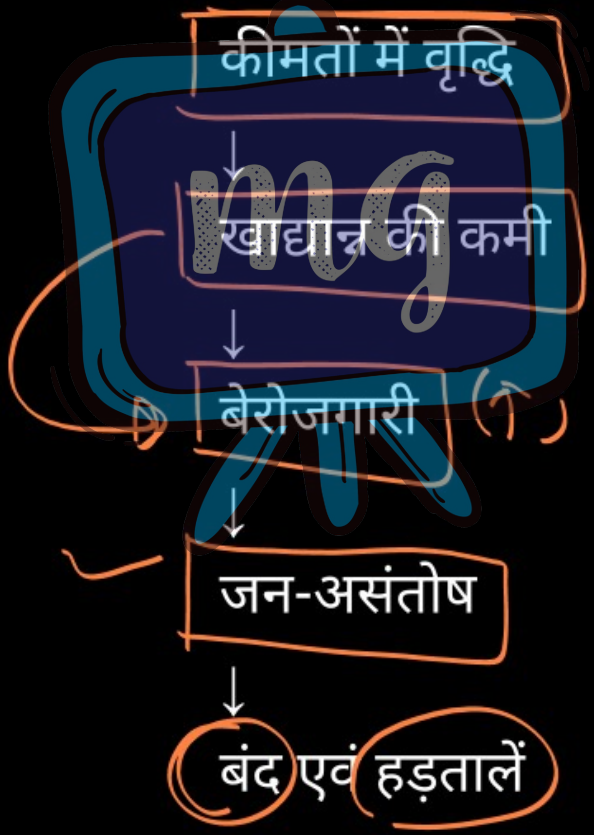


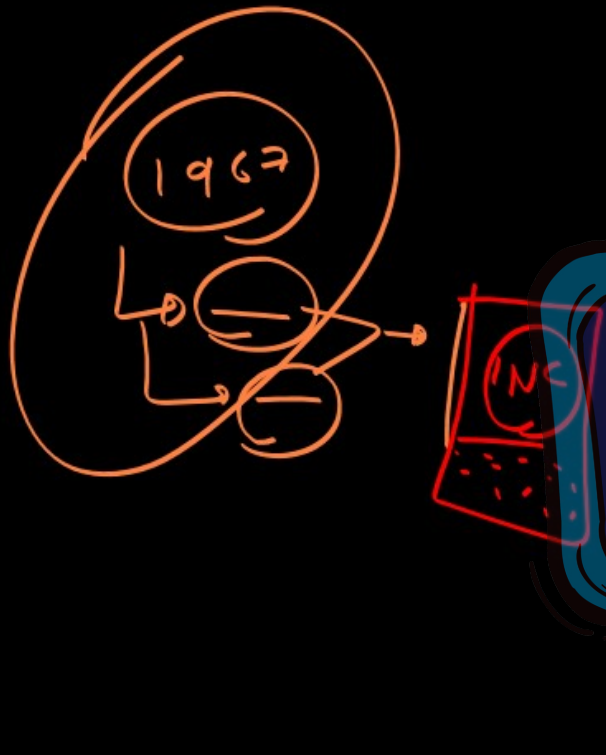
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

III. आर्थिक संकट के सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव

आर्थिक कठिनाइयों के कारण—





↓

सरकार के विरुद्ध उग्र विरोध

सरकार ने इसे मुख्यतः कानून और व्यवस्था की समस्या माना, जबकि जनता इसे अपनी बदहाली से जोड़ रही थी।

इसी अवधि में गंभीर हिन्दू-मुस्लिम सांप्रदायिक दंगे भी हुए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1967 के चुनाव परिणामों को 'राजनीतिक भूकंप' क्यों कहा गया?

[Model Paper-2025]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

भारत में चौथा आम चुनाव कब हुआ?

[RBSE-2025]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

कांग्रेस ने 1967 का आम चुनाव किन परिस्थितियों में लड़ा और क्या जनादेश मिला? [RBSE-2022]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

गैर-कांग्रेसवाद

अर्थ

कांग्रेस विरोधी विभिन्न विचारधाराओं के दलों का कांग्रेस को सत्ता से हटाने के लिए एकजुट होना।

पृष्ठभूमि

विपक्षी दलों का मानना था—

- कांग्रेस विरोधी वोट विंभिन्न दलों में बँट जाते हैं।
- इसी कारण कांग्रेस सत्ता में बनी रहती है।

इसलिए विभिन्न विचारधाराओं वाले दलों ने–

- कुछ राज्यों में कांग्रेस-विरोधी मोर्चा बनाया।
- अन्य राज्यों में सीटों का चुनावी तालमेल किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

राममनोहर लोहिया की भूमिका

समाजवादी नेता राममनोहर लोहिया ने इस रणनीति को– "गैर-कांग्रेसवाद" नाम दिया।

उनके अनुसार कांग्रेस का शासन–

- अलोकतांत्रिक था,
- गरीबों के हितों के विरुद्ध था,

इसलिए गैर-कांग्रेसी दलों को साथ आना चाहिए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

10. 1967 के चुनाव का जनादेश

फरवरी 1967 में—

- लोकसभा
- तथा राज्य विधानसभाओं के लिए चुनाव हुए।

कांग्रेस की स्थिति

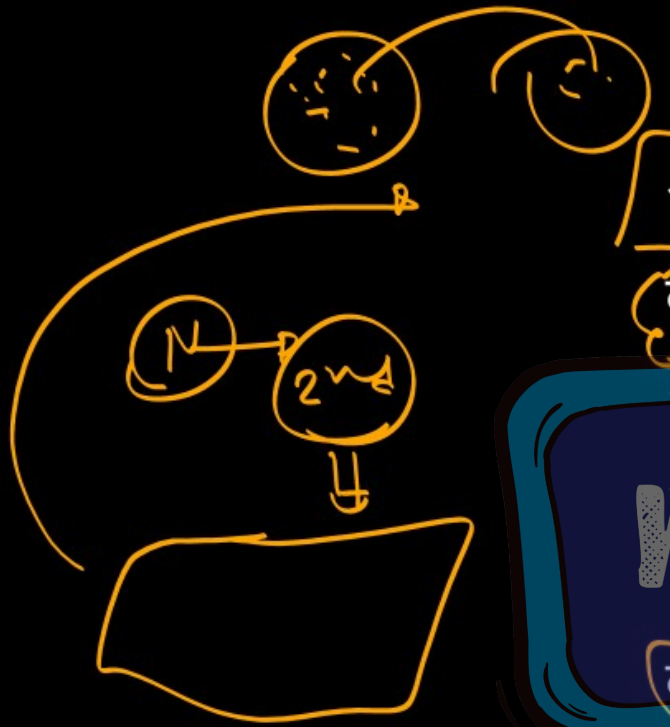
- कांग्रेस पहली बार नेहरू के बिना चुनाव लड़ रही थी।
- उसे लोकसभा में बहुमत मिला, लेकिन—
  - मत प्रतिशत घटा।
  - सीटों की संख्या घटी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इंदिरा गाँधी मंत्रिमंडल के लगभग आधे मंत्री चुनाव हार गए।
- चुनाव परिणामों को अनेक पर्यवेक्षकों ने "राजनीतिक भूकंप" कहा।



11. राज्यों में कांग्रेस को झटका

कांग्रेस—

- सात राज्यों में बहुमत प्राप्त नहीं कर सकी।
- दो अन्य राज्यों में दल-बदल के कारण सरकार नहीं बना सकी।

कांग्रेस निम्न राज्यों में सरकार नहीं बना सकी–

पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, मद्रास और केरल।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मद्रास का विशेष मामला

कांग्रेस—

- द्रविड़ मुनेत्र कषगम (DMK) ने पूर्ण बहुमत प्राप्त किया।
- DMK ने हिंदी-विरोधी आंदोलन का नेतृत्व किया था।
- यह पहली बार था जब किसी गैर-कांग्रेसी दल को किसी राज्य में पूर्ण बहुमत मिला

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

गैर-कांग्रेसवाद के रणनीतिकार कौन थे?

[RBSE-2026]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लघूत्तरात्मक प्रश्न

गैर-कांग्रेसवाद क्या था?

[Model Paper-2024]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



गठबंधन राजनीति का उदय

1967 के चुनावों ने गठबंधन राजनीति को प्रमुख बनाया।

कारण

कई राज्यों में किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला।

परिणाम

विभिन्न गैर-कांग्रेसी दलों ने मिलकर—

संयुक्त विधायक दल (SVD) बनाए।

इन दलों की विचारधाराएँ अक्सर एक-दूसरे से भिन्न थीं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बिहार

एक ही सरकार में—

- SSP
- PSP
- CPI
- जनसंघ

जैसे वैचारिक रूप से अलग दल शामिल थे।

पंजाब

सरकार को 'पॉपुलर यूनाइटेड फ्रंट' कहा गया।

दल-बदल

I. परिभाषा

जब कोई निर्वाचित जनप्रतिनिधि जिस दल के चुनाव-चिह्न पर चुनाव जीतता है, बाद में उस दल को छोड़कर दूसरे दल में शामिल हो जाए, इसे दल-बदल कहते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



II. प्रभाव

1967 के बाद दल-बदल ने राज्यों में—

- सरकार बनाने,
- सरकार गिराने,
- बहुमत बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विशेष रूप से—

- हरियाणा
- मध्य प्रदेश
- उत्तर प्रदेश में गैर-कांग्रेसी सरकारों की स्थापना में कांग्रेस छोड़ने वाले विधायकों की भूमिका रही।

III. 'आया राम-गया राम'

यह प्रसिद्ध राजनीतिक मुहावरा हरियाणा के विधायक गया लाल से जुड़ा है।

घटना

एक पखवाड़े में उन्होंने तीन बार दल बदला—

कांग्रेस

↓

यूनाइटेड फ्रंट

↓

कांग्रेस

↓

9 घंटे के भीतर

↓

यूनाइटेड फ्रंट

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कांग्रेस नेता राव वीरेन्द्र सिंह ने कहा—
"गया राम था, अब आया राम है।"
इसके बाद दल-बदल की राजनीति के लिए 'आया राम-गया राम' मुहावरा प्रसिद्ध हो गया। बाद में दल-बदल रोकने के लिए संविधान में संशोधन किया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

'आया राम-गया राम' के गया लाल किस राज्य से संबंधित थे?

[Model Paper-2026]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लघूत्तरात्मक प्रश्न

दल-बदल क्या है?

[Model Paper-2023, RBSE-2024, RBSE-2026]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1967 के बाद कांग्रेस की स्थिति

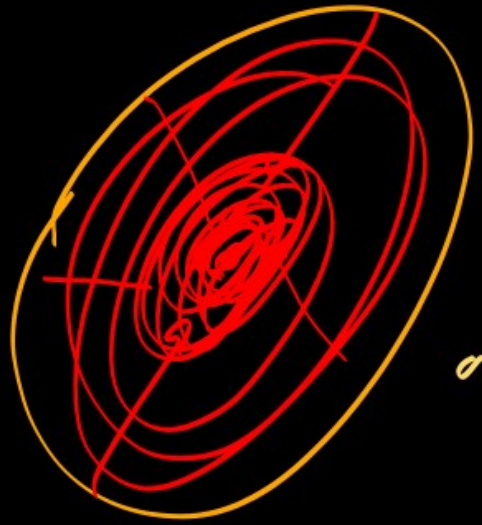
1967 के चुनावों ने साबित किया—

I. कांग्रेस को चुनावों में हराया जा सकता है।

- फिर भी—
- केंद्र में कांग्रेस की सरकार बनी रही।
- उसके पास पहले जितना बहुमत नहीं था।
- अधिकतर गैर-कांग्रेसी गठबंधन सरकारें लंबे समय तक नहीं टिक सकीं।
- कहीं नए गठबंधन बनाने पड़े।
- कहीं राष्ट्रपति शासन लागू हुआ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



II.. इंदिरा गाँधी बनाम सिंडिकेट

A. 'सिंडिकेट' का अर्थ

- कांग्रेस के भीतर शक्तिशाली एवं प्रभावशाली नेताओं का एक अनौपचारिक समूह, जिसका पार्टी संगठन पर नियंत्रण था।

B. प्रमुख नेता

- के. कामराज
- एस.के. पाटिल
- एस. निजलिंगप्पा
- एन. संजीव रेड्डी
- अतुल्य घोष

K 'SS N

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

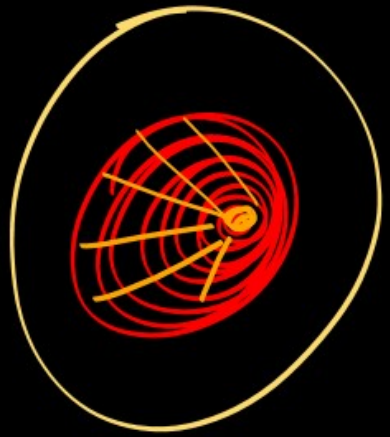
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

C. भूमिका

- लालबहादुर शास्त्री और इंदिरा गाँधी को प्रधानमंत्री बनाने में सहायता।
- इंदिरा गाँधी की प्रारंभिक मंत्रिपरिषद में निर्णायक प्रभाव।
- नीति-निर्माण और क्रियान्वयन में महत्त्वपूर्ण भूमिका।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



III इंदिरा गाँधी की चुनौती

इंदिरा गाँधी के सामने दो मुख्य लक्ष्य थे—

सिंडिकेट से स्वतंत्र राजनीतिक पहचान बनाना

1967 में कांग्रेस द्वारा खोया जनसमर्थन वापस प्राप्त करना

उन्होंने सत्ता-संघर्ष को धीरे-धीरे विचारधारात्मक संघर्ष का रूप दिया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

IV. दस-सूत्री कार्यक्रम, 1967

- मई 1967 में कांग्रेस कार्यसमिति ने इंदिरा गाँधी के प्रभाव में दस-सूत्री कार्यक्रम स्वीकार किया।

प्रमुख प्रावधान—

- बैंकों पर सामाजिक नियंत्रण
- आम बीमा का राष्ट्रीयकरण
- शहरी संपदा का परिसीमन
- आय का परिसीमन
- खाद्यान्न का सरकारी वितरण
- भूमि सुधार

- ग्रामीण गरीबों के लिए आवासीय भूखंड
- सिंडिकेट ने औपचारिक रूप से इसे स्वीकार किया, लेकिन उसके नेताओं के मन में कार्यक्रम को लेकर संदेह था।



अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

सिंडिकेट के किन्हीं दो नेताओं के नाम लिखिए।

[RBSE-2026]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लघूत्तरात्मक प्रश्न

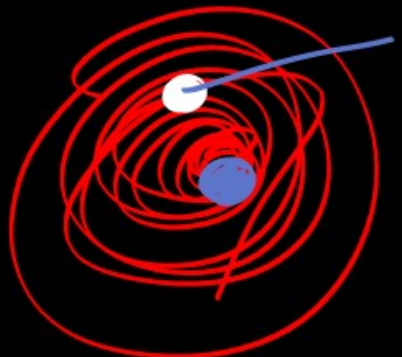
सिंडिकेट से क्या समझते हैं?

[Model Paper-2025]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



राष्ट्रपति चुनाव, 1969

1969 का राष्ट्रपति चुनाव इंदिरा गाँधी-सिंडिकेट संघर्ष का निर्णायक बिंदु बना।

I. सिंडिकेट का उम्मीदवार

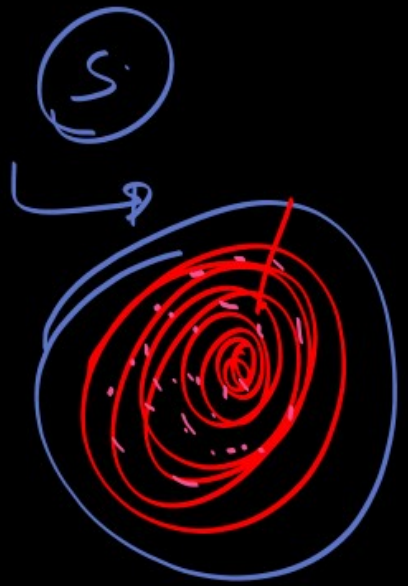
एन. संजीव रेड्डी

II. इंदिरा गाँधी द्वारा समर्थित उम्मीदवार

तत्कालीन उपराष्ट्रपति वी.वी. गिरि, जिन्होंने स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में नामांकन किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



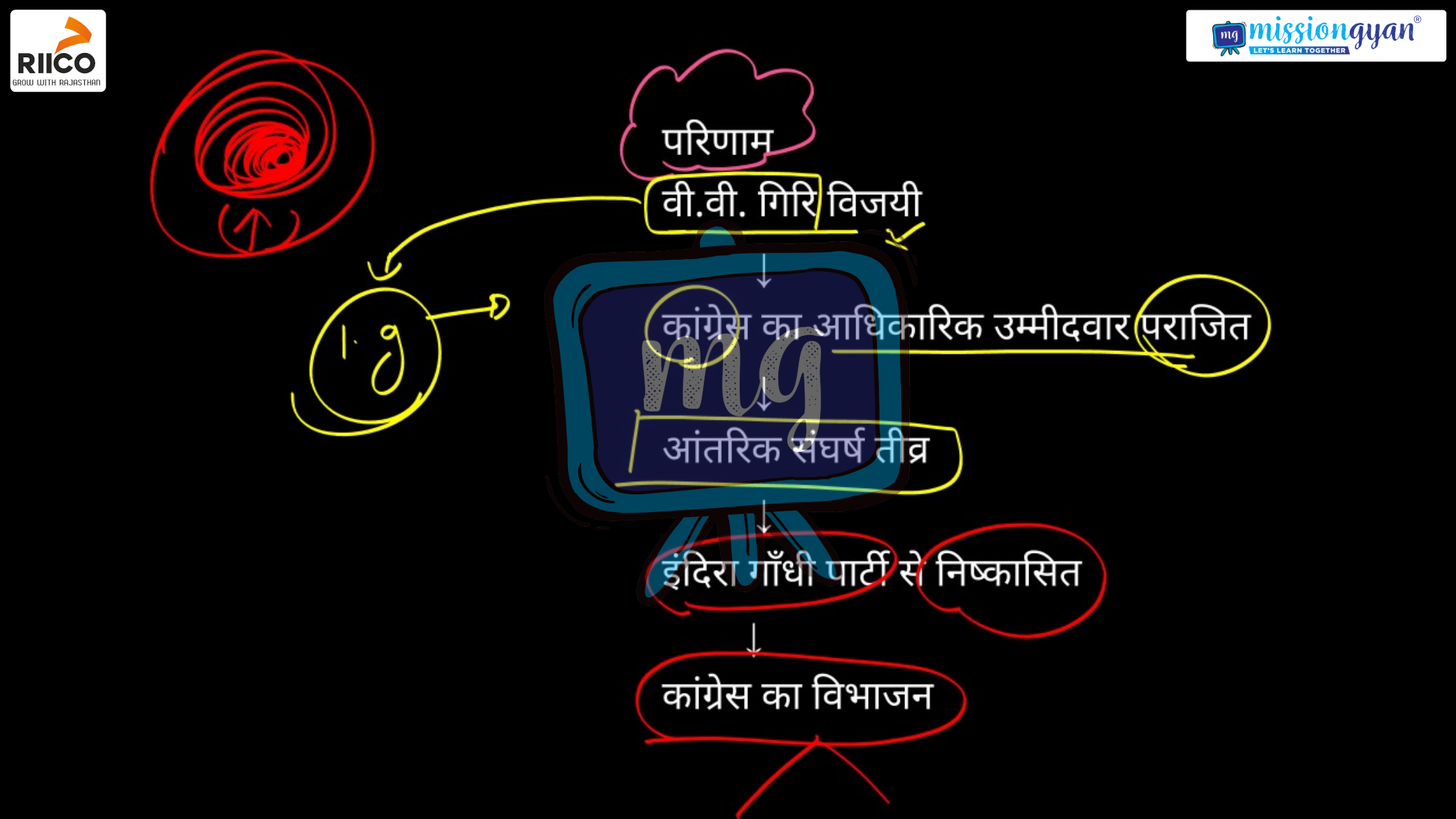
III. कांग्रेस के भीतर टकराव

कांग्रेस अध्यक्ष एस. निजलिंगप्पा ने पार्टी सांसदों और विधायकों के लिए व्हिप जारी किया—

→ कांग्रेस के आधिकारिक उम्मीदवार संजीव रेड्डी को वोट दें।

इसके विपरीत इंदिरा गाँधी ने—

"अंतरात्मा की आवाज पर वोट" देने की अपील की।


परिणाम
वी.वी. गिरि विजयी
कांग्रेस का आधिकारिक उम्मीदवार पराजित
आंतरिक संघर्ष तीव्र
इंदिरा गाँधी पार्टी से निष्कासित
कांग्रेस का विभाजन

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



कांग्रेस का विभाजन, 1969

नवंबर 1969 तक कांग्रेस दो भागों में बँट गई—

गुट

कांग्रेस (O) — Organization — सिंडिकेट

कांग्रेस (R) — Requisitionists — इंदिरा गाँधी

इन्हें क्रमशः —

- पुरानी कांग्रेस
- नयी कांग्रेस भी कहा गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



I. विचारधारात्मक संघर्ष का रूप

इंदिरा गाँधी ने कांग्रेस के विभाजन को—

(i) समाजवादी बनाम पुरातनपंथी

और

(ii) गरीबों के समर्थक बनाम अमीरों के समर्थक

की लड़ाई के रूप में प्रस्तुत किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

II. प्रमुख जनप्रिय नीतियाँ

इस संघर्ष के दौरान इंदिरा गाँधी ने—

- 14 प्रमुख बैंकों का राष्ट्रीयकरण
- प्रिवी पर्स समाप्त करने की पहल

जैसी नीतियाँ अपनाईं।

इन मुद्दों पर उपप्रधानमंत्री एवं वित्तमंत्री मोरारजी देसाई से मतभेद हुए और उन्होंने सरकार से अलग होने का निर्णय लिया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रिवी पर्स

A. अर्थ

- देशी रियासतों के भारतीय संघ में विलय के समय पूर्व शासक परिवारों को—
  - ❖ निजी संपत्ति रखने का अधिकार,
  - ❖ तथा सरकार से विशेष भत्ते

दिए जाने की व्यवस्था को प्रिवी पर्स कहा गया।

B. समाप्ति के पक्ष में तर्क

ये वंशानुगत विशेषाधिकार—

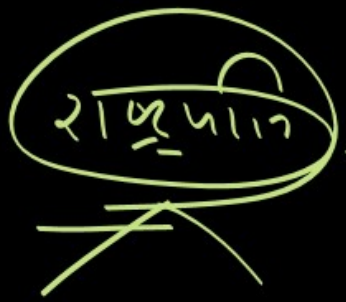
- ❖ समानता
- ❖ तथा सामाजिक-आर्थिक न्याय

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

C. समाप्ति की प्रक्रिया

- 1970
  - → संविधान संशोधन का प्रयास
  - → राज्यसभा में असफल
    - ↓
    - सरकार ने अध्यादेश जारी किया
      - ↓
      - सर्वोच्च न्यायालय ने निरस्त किया



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रिवी पर्स से क्या अभिप्राय है?

[RBSE-2022, RBSE-2025]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1967

1971 का चुनाव और कांग्रेस का पुनर्स्थापन

I. चुनाव से पहले स्थिति

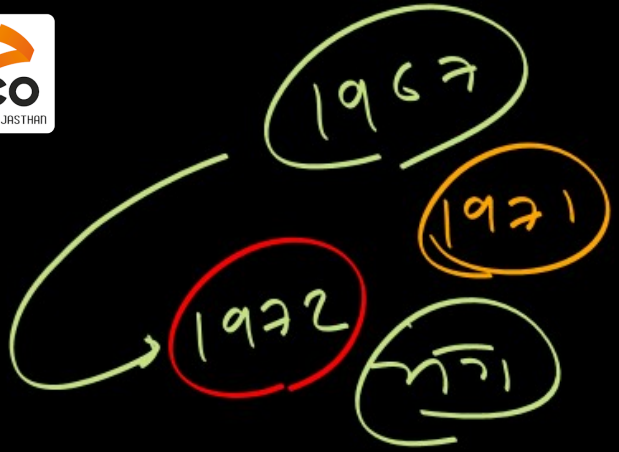
- कांग्रेस के विभाजन के बाद इंदिरा गाँधी की सरकार अल्पमत में आ गई।
- लेकिन उसे—
  - DMK
  - CPI
  - तथा अन्य दलों

का मुद्दा-आधारित समर्थन मिलता रहा।

सरकार ने अपनी छवि को अधिक समाजवादी रूप में प्रस्तुत किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



II. दिसंबर 1970

- लोकसभा भंग करने की सिफारिश की गई।
- फरवरी 1971
- पाँचवाँ आम चुनाव हुआ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

III. 1971 का 'ग्रैंड अलायंस'

- इंदिरा गाँधी के विरुद्ध प्रमुख गैर-साम्यवादी तथा गैर-कांग्रेसी दलों ने ग्रैंड अलायंस बनाया।
- इसमें शामिल थे—
  - SSP
  - PSP
  - भारतीय जनसंघ
  - स्वतंत्र पार्टी
  - भारतीय क्रांतिदल
- इंदिरा गाँधी के नेतृत्व वाले शासक दल ने CPI के साथ गठजोड़ किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



IV. 'इंदिरा हटाओ' बनाम 'गरीबी हटाओ'

इंदिरा गाँधी ने विपक्ष की राजनीति को— "इंदिरा हटाओ" के रूप में प्रस्तुत किया। इसके विपरीत उन्होंने अपना नारा दिया— "गरीबी हटाओ"

प्रमुख मुद्दे

- सार्वजनिक क्षेत्र की संवृद्धि
- ग्रामीण भू-स्वामित्व का परिसीमन
- शहरी संपदा का परिसीमन
- आय एवं अवसरों की असमानता की समाप्ति
- प्रिवी पर्स की समाप्ति

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

समर्थन का सामाजिक आधार

इंदिरा गाँधी ने विशेष रूप से—

- भूमिहीन किसान
- दलित
- आदिवासी
- अल्पसंख्यक
- महिलाएँ
- बेरोजगार नौजवान

के बीच समर्थन बढ़ाने की कोशिश की।

V. 1971 चुनाव परिणाम

A. कांग्रेस (R) + CPI गठबंधन

375 लोकसभा सीटें

48.4% मत

B. अकेले कांग्रेस (R)

352 सीटें

44% मत

C. कांग्रेस (O)

केवल 16 सीटें

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



D. ग्रैंड अलायंस

60 से भी कम सीटें

E. महत्व

इस जीत ने इंदिरा गाँधी की कांग्रेस के इस दावे को मजबूत किया कि—

वही 'असली कांग्रेस' है।

कांग्रेस भारतीय राजनीति में पुनः प्रभुत्व की स्थिति में पहुँच गई।

VI 1971 युद्ध और इंदिरा गाँधी की लोकप्रियता

1971 के लोकसभा चुनावों के तुरंत बाद—

पूर्वी पाकिस्तान में संकट

↓

भारत-पाक युद्ध

↓

बांग्लादेश का निर्माण

इन घटनाओं से इंदिरा गाँधी की लोकप्रियता बढ़ी।

उन्हें–

- मजबूत राष्ट्रवादी नेता,
- गरीबों एवं वंचितों की रक्षक के रूप में देखा जाने लगा।

VI. 1972 विधानसभा चुनाव

कांग्रेस को व्यापक सफलता मिली।

लोकसभा और राज्य चुनावों की लगातार जीतों से कांग्रेस का प्रभुत्व पुनः स्थापित हुआ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

'गरीबी हटाओ' का नारा किसने दिया?

[RBSE-2022, Model Paper-2024]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

'गरीबी हटाओ' का नारा किसने दिया?

[RBSE-2022, Model Paper-2024]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1971 का चुनाव कांग्रेस की पुनर्स्थापना का चुनाव कैसे बना?

[RBSE-2022]



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कांग्रेस प्रणाली का पुनर्स्थापन

क्या पुरानी कांग्रेस प्रणाली वास्तव में पुनर्स्थापित हुई?

—प्रभुत्व पुनर्स्थापित हुआ, लेकिन कांग्रेस की प्रकृति बदल चुकी थी।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

I. पुरानी और नयी कांग्रेस में अंतर		
आधार	**पुरानी कांग्रेस**	**नयी कांग्रेस**
संगठन	मजबूत	अपेक्षाकृत कमजोर
नेतृत्व	संगठन एवं अनेक नेताओं पर आधारित	सर्वोच्च नेता की लोकप्रियता पर निर्भर
आंतरिक गुट	अनेक गुट मौजूद	गुटों की भूमिका कम
हितों का समायोजन	विभिन्न मतों एवं हितों को साथ रखने की क्षमता	यह क्षमता कमजोर

I. पुरानी और नयी कांग्रेस में अंतर		
आधार	**पुरानी कांग्रेस**	**नयी कांग्रेस**
सामाजिक आधार	व्यापक	गरीब, महिला, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक पर अधिक निर्भर
प्रकृति	बहुविध हितों का समायोजन	अधिक केंद्रीकृत नेतृत्व आधारित

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

इंदिरा गाँधी ने कांग्रेस प्रणाली को पुनर्स्थापित तो किया,
लेकिन—
कांग्रेस प्रणाली की प्रकृति बदलकर।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

II. नयी कांग्रेस की प्रमुख सीमाएँ

पुरानी कांग्रेस व्यवस्था की एक विशेषता थी— आंतरिक तनाव और संघर्षों को अपने भीतर समाहित कर लेना।

नयी कांग्रेस–

- अधिक लोकप्रिय थी,
- लेकिन आंतरिक मतभेदों को समाहित करने की क्षमता कमजोर थी।

परिणाम—

कांग्रेस की पकड़ मजबूत

+

इंदिरा गाँधी की राजनीतिक हैसियत में वृद्धि

लेकिन—

जनता की आकांक्षाओं की लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति की जमीन छोटी हुई।

साथ ही—

- आर्थिक बदहाली,
- विकास संबंधी असंतोष,
- जन-लामबंदी बढ़ती रही।

प्रमुख व्यक्तित्व

लालबहादुर शास्त्री

भारत के दूसरे प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री कार्यकाल : 1964–1966

सादगी एवं सिद्धांत-निष्ठा के लिए प्रसिद्ध

नारा : जय जवान, जय किसान

इंदिरा गाँधी

प्रधानमंत्री : 1966–1977, पुनः 1980–1984

1959 में कांग्रेस अध्यक्ष

1967, 1971 और 1980 के चुनावों में कांग्रेस का नेतृत्व

नारा : गरीबी हटाओ

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

राममनोहर लोहिया

समाजवादी नेता एवं विचारक

गैर-कांग्रेसवाद के रणनीतिकार

के. कामराज

वरिष्ठ कांग्रेस नेता

कांग्रेस अध्यक्ष

कामराज योजना से जुड़े

सिंडिकेट के प्रमुख नेताओं में शामिल

एस. निजलिंगप्पा

वरिष्ठ कांग्रेस नेता

1968–71 के दौरान कांग्रेस अध्यक्ष

सिंडिकेट से जुड़े प्रमुख नेता

वी.वी. गिरि

1969–1974 भारत के राष्ट्रपति

1969 में स्वतंत्र राष्ट्रपति उम्मीदवार

इंदिरा गाँधी के समर्थन से विजयी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

घटनाक्रम : टाइमलाइन

1964

→ नेहरू की मृत्यु

→ लालबहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री

1965

→ पाकिस्तान के साथ युद्ध

→ "जय जवान, जय किसान"

11 जनवरी 1966

→ ताशकंद में शास्त्री का निधन

1966

→ इंदिरा गाँधी प्रधानमंत्री

1967

→ चौथा आम चुनाव

→ कांग्रेस को बड़ा चुनावी झटका

→ गैर-कांग्रेसवाद

→ गठबंधन सरकारें

→ दल-बदल

मई 1967

→ दस-सूत्री कार्यक्रम

1969

→ राष्ट्रपति चुनाव

→ वी.वी. गिरि की जीत

→ कांग्रेस विभाजन

→ कांग्रेस (O) और कांग्रेस (R)

1970

→ लोकसभा भंग करने की सिफारिश

→ प्रिवी पर्स समाप्ति हेतु संवैधानिक प्रयास

फरवरी 1971

→ पाँचवाँ आम चुनाव

→ 'गरीबी हटाओ'

→ कांग्रेस (R) की भारी जीत

1971

→ भारत-पाक युद्ध

→ बांग्लादेश का निर्माण

→ प्रिवी पर्स समाप्ति का मार्ग साफ

1972

→ राज्य विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की व्यापक सफलता